कोडीन पर प्रतिबंध की मांग

कोडीन काफी शक्तिशाली दर्द निवारक है और इसका उपयोग भी खूब किया जाता है। मगर कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं का मत है कि कोडीन एक ऐसा दर्द निवारक है जो कुछ लोगों में असरहीन रहता है जबकि कुछ लोगों के लिए यह जानलेवा साबित हो सकता है।

दरअसल, शरीर में पहुंचकर कोडीन एक अन्य पदार्थ मॉर्फीन में बदल जाता है। यह मॉर्फीन ही दर्द से छुटकारा दिलाने का काम करता है। इस प्रक्रिया में दिक्कत यह है कि हर व्यक्ति में कोडीन का मॉर्फीन में परिवर्तन एक-सा नहीं होता। यह परिवर्तन कितनी हद तक होगा, यह व्यक्ति की जिनेटिक बनावट पर निर्भर करता है। यानी हर व्यक्ति में मॉर्फीन की अलग-अलग मात्रा उत्पन्न होती है।

कैनेडियन मेडिकल एसोसिएशन जर्नल में प्रकाशित शोध पत्र में स्टुआर्ट मैक्लियॉड और नोनी मैकडोनाल्ड ने बताया है कि यह समस्या शिशुओं को सबसे ज़्यादा प्रभावित करती है। उन्होंने दो बच्चों का उदाहरण भी दिया है जिन्हें टॉन्सिल ऑपरेशन के बाद कोडीन दी जा रही थी, और दोनों की ही मृत्यु हो गई थी। इसके अलावा दो अध्ययनों में यह भी पता चला कि यदि स्तनपान कराने वाली मां कोडीन का सेवन कर रही हो तो उनके बच्चे कोडीन की घातक मगर गैर-जानलेवा विषाक्तता से पीड़ित हो जाते हैं।

इन अध्ययनों के बाद टोरोन्टो स्थित शिशु चिकित्सालय ने कोडीन का उपयोग रोक दिया है। मगर चिकित्सा जगत इस पर व्यापक प्रतिबंध को जायज़ नहीं मानता क्योंकि मात्र 1-2 प्रतिशत आबादी में ही शरीर में मॉर्फीन की अत्यधिक मात्रा उत्पन्न होने की स्थिति आती है। दर्द निवारक के रूप में कोडीन की उपयोगिता को देखते हुए इस पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना उचित नहीं होगा। कम से कम यूके के नियामक प्रशासन को यही लगता है। ***(स्रोत फीचर्स)***